अध्याय 1: सिल्वर वैडिंग

विषय-सूची 1 प्रश्नावली · 5 प्रश्न

प्रश्नावली 1.1 अभ्यास 5 प्रश्न

प्रश्नावली 1.1 — अभ्यास

प्रश्न 1

यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं। ऐसा क्यों?

हल

यशोधर बाबू की पत्नी और यशोधर बाबू दोनों परंपरागत परिवेश से आए हैं, परंतु दोनों का बदलाव के प्रति दृष्टिकोण सर्वथा भिन्न है।

यशोधर बाबू ने किशनदा को अपना आदर्श मान लिया है। किशनदा की जीवन-शैली — सुबह की सैर, संध्या-पूजा, पुरानी परंपराओं का पालन, ऊनी गाउन और खड़ाऊँ — यशोधर बाबू ने इन्हें एक 'बाध्यकारी विरासत' के रूप में अपनाया है। वे उस जमाने के मूल्यों से इतने अभिन्न हो गए हैं कि किसी भी परिवर्तन को 'समहाउ इंप्रापर' कहकर नकार देते हैं।

उनकी पत्नी के पास ऐसा कोई अडिग आदर्श नहीं है। वे व्यावहारिक हैं — बेटे की कमाई से घर में फ्रिज, गैस, कारपेट आए तो उन्हें स्वीकार कर लिया; बेटी की सलाह पर बगैर बाँह का ब्लाउज पहना, ऊँची हील की सैंडल पहनी। उनकी प्रेरणा बच्चों की खुशी और घर का सुख है — और वे बदलते समय के साथ चलने में अपना अपमान नहीं मानतीं।

यशोधर बाबू का अहंकार इस बदलाव में बाधक है। वे चाहते हैं कि बच्चे उनसे वैसे ही सलाह लें जैसे वे किशनदा से लेते थे। जब बच्चे उनकी उपेक्षा करते हैं तो वे और अधिक अतीत में डूबते जाते हैं।

इस प्रकार पत्नी की सफलता व्यावहारिकता और लचीलेपन में है, जबकि यशोधर बाबू की असफलता किशनदा-केंद्रित जीवन-दर्शन की जड़ता में।

उत्तर: यशोधर बाबू किशनदा के आदर्शों को जड़ता से थामे हुए हैं और हर बदलाव को 'समहाउ इंप्रापर' कहकर नकारते हैं। उनकी पत्नी के पास ऐसा अडिग आदर्श नहीं है — वे व्यावहारिक हैं और बच्चों के साथ बदलती जाती हैं।

प्रश्न 2

पाठ में 'जो हुआ होगा' वाक्य की आप कितनी अर्थ छवियाँ खोज सकते / सकती हैं?

हल

'जो हुआ होगा' वाक्यांश पाठ में अनेक स्तरों पर अर्थवान है। इसकी प्रमुख अर्थ-छवियाँ इस प्रकार हैं —

1. किशनदा की मृत्यु का रहस्य: जब यशोधर बाबू ने किशनदा के निधन का कारण पूछा तो उत्तर मिला — 'जो हुआ होगा।' यानी 'पता नहीं, कुछ हुआ होगा।' यह अर्थ सबसे शाब्दिक है — अज्ञात कारण से हुई मृत्यु।
2. एकाकीपन की मृत्यु: किशनदा जीवन भर दूसरों के लिए जीए, परंतु रिटायरमेंट के बाद उन्हें कोई शरण देने

वाला नहीं था। इस अकेलेपन और अप्रासंगिकता की पीड़ा ने उन्हें अंदर से खोखला कर दिया। 'जो हुआ होगा' इस मानसिक मृत्यु का संकेत है।

3. यशोधर बाबू की स्थिति: कहानी के अंत में यशोधर बाबू स्वयं उसी स्थिति की ओर बढ़ रहे हैं — घर में पराए, बच्चों द्वारा उपेक्षित। उनकी आँखों में आई नमी इसी 'जो हुआ होगा' की पूर्वाभास है।

4. पीढ़ी के अंतराल की त्रासदी: पुरानी पीढ़ी के मूल्य, उनका अकेलापन, नई पीढ़ी की उदासीनता — यह सब 'जो हुआ होगा' में समाया है। यह वाक्यांश पीढ़ी-दर-पीढ़ी की उस नियति का प्रतीक है जहाँ वृद्ध मनुष्य धीरे-धीरे अप्रासंगिक होता जाता है।

5. जीवन की अनिश्चितता: यह वाक्यांश सामान्य रूप से उस नियति का भी बोधक है जो सबके साथ होती है — गृहस्थ हो या ब्रह्मचारी, अमीर हो या गरीब — सब इसी 'जो हुआ होगा' से मरते हैं (किशनदा के शब्दों में)।

उत्तर: 'जो हुआ होगा' के पाँच प्रमुख अर्थ हैं: (1) किशनदा की अज्ञात मृत्यु का कारण, (2) एकाकीपन की मानसिक मृत्यु, (3) यशोधर बाबू की आसन्न नियति का पूर्वाभास, (4) पीढ़ी के अंतराल की त्रासदी, और (5) मनुष्य-मात्र की अनिश्चित नियति।

प्रश्न 3

'समहाउ इंप्रापर' वाक्यांश का प्रयोग यशोधर बाबू लगभग हर वाक्य के प्रारंभ में तकिया कलाम की तरह करते हैं। इस वाक्यांश का उनके व्यक्तित्व और कहानी के कथ्य से क्या संबंध बनता है?

हल

यशोधर बाबू का तकिया कलाम 'समहाउ इंप्रापर' (Somehow improper) उनके पूरे व्यक्तित्व की कुंजी है। यह वाक्यांश उनके उस मनोभाव को व्यक्त करता है जो नए के प्रति अस्वीकृति तो है, परंतु जिसे वे तर्कसंगत रूप से स्पष्ट नहीं कर पाते। 'समहाउ' (किसी तरह) का प्रयोग ही यह स्वीकार करता है कि वे ठीक-ठीक नहीं बता सकते कि क्यों अनुचित है — बस लगता है कि अनुचित है।

यशोधर बाबू इसे हर उस चीज के लिए प्रयोग करते हैं जो उनकी 'किशनदा-परंपरा' से हटकर है — चाहे वह बेटे की ऊँची तनख्वाह हो, बेटी की जीन हो, पत्नी का बगैर बाँह का ब्लाउज और ऊँची हील की सैंडल पहनना हो, सिल्वर वैडिंग की पार्टी हो, या फ्रिज और कारपेट।

इस वाक्यांश और उनके व्यक्तित्व का संबंध यह है कि वे परिवर्तन को अनिच्छा से तो अस्वीकार करते हैं, किंतु यह भी जानते हैं कि उनका विरोध खोखला है। जब बेटे ने फ्रिज लाया तो उन्होंने 'इसका फायदा क्या है' कहा, पर साथ ही यह भी स्वीकार किया कि मेहमान उसका पानी पीकर खुश होते हैं।

कहानी के कथ्य से यह संबंध बनता है कि 'समहाउ इंप्रापर' यशोधर बाबू की उस द्विधा का प्रतीक है जिसमें पुरानी परंपरा और नई वास्तविकता के बीच वे झूल रहे हैं — न पूरी तरह पुराने के साथ, न नए को स्वीकार करने में सक्षम। यही इस कहानी की केंद्रीय संवेदना है — पीढ़ी का अंतराल और उससे उत्पन्न व्यक्तिगत अकेलापन।

उत्तर: 'समहाउ इंप्रापर' यशोधर बाबू की उस द्विधा का प्रतीक है जो किशनदा-परंपरा और नई वास्तविकता के बीच है। वे बदलाव को तर्कसंगत रूप से नकार नहीं पाते — बस 'किसी तरह अनुचित लगता है' कहकर अस्वीकार करते हैं। यह कहानी के पीढ़ी-संघर्ष और व्यक्तिगत अकेलेपन के कथ्य से सीधे जुड़ा है।

प्रश्न 4

निम्नलिखित में से किसे आप कहानी की मूल संवेदना कहेंगे / कहेंगी और क्यों? (क) हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य (ख) पीढ़ी का अंतराल (ग) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

हल

इस कहानी की मूल संवेदना (ख) पीढ़ी का अंतराल है।

कहानी का मुख्य संघर्ष यशोधर बाबू और उनके बच्चों के बीच है — पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के मूल्यों, जीवन-शैली और प्राथमिकताओं का टकराव।

यशोधर बाबू किशनदा की परंपराओं को ढोते हैं — संध्या-पूजा, साइकिल से जाना, रिश्तेदारी निभाना, घर के काम स्वयं करना। उनके बच्चे इन्हें 'बाबा आदम के जमाने की बातें' कहते हैं और उनसे सलाह लेना भी उचित नहीं समझते।

यशोधर बाबू की पत्नी भी बदल चुकी है — वह बच्चों के साथ है। यशोधर बाबू अकेले रह गए हैं।

शेष दोनों विकल्प इस कहानी के आयाम तो हैं, परंतु मूल संवेदना नहीं — पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव (ग) एक सहायक तत्त्व है, और मानवीय मूल्यों का हाशिए पर जाना (क) पीढ़ी के अंतराल का ही परिणाम है, स्वतंत्र संवेदना नहीं।

कहानी का शीर्षक 'सिल्वर वैडिंग' भी इसी पीढ़ी-संघर्ष की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है — विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ उन बच्चों ने मनाई, यशोधर बाबू को यह पर्व ही 'समहाउ इंप्रापर' लगा।

उत्तर: कहानी की मूल संवेदना (ख) पीढ़ी का अंतराल है। पाश्चात्य प्रभाव और मूल्य-ह्रास इसी के अंतर्गत आते हैं। यशोधर बाबू का अकेलापन और उनके परिवार की उनसे दूरी इसी पीढ़ी-संघर्ष की परिणति है।

प्रश्न 5

यशोधर बाबू के बारे में आपकी क्या धारणा बनती है? दिए गए तीन कथनों में से आप जिसके समर्थन में हैं, अपने अनुभवों और सोच के आधार पर उसके लिए तर्क दीजिए — (क) यशोधर बाबू के विचार पूरी तरह से पुराने हैं और वे सहानुभूति के पात्र नहीं हैं। (ख) यशोधर बाबू में एक तरह का द्वंद्व है जिसके कारण नया उन्हें कभी-कभी खींचता तो है पर पुराना छोड़ता नहीं। इसलिए उन्हें सहानुभूति के साथ देखने की जरूरत है। (ग) यशोधर बाबू एक आदर्श व्यक्तित्व है और नयी पीढ़ी द्वारा उनके विचारों का अपनाना ही उचित है।

हल

पाठ के साक्ष्यों के आधार पर (ख) कथन सर्वाधिक उचित है — यशोधर बाबू में द्वंद्व है और वे सहानुभूति के पात्र हैं।

विकल्प (क) को अस्वीकार करने के कारण: यशोधर बाबू पूरी तरह जड़ नहीं हैं। वे स्वयं मानते हैं कि 'एनीवे जेनरेशनों में गैप तो होता ही है।' वे बच्चों की तरक्की पर गर्व भी करते हैं, केवल उनसे रिश्तेदारी और सम्मान चाहते हैं। वे सहानुभूति के पात्र हैं।

विकल्प (ग) को अस्वीकार करने के कारण: यशोधर बाबू आदर्श नहीं हैं — वे कभी-कभी अपने बच्चों की भावनाओं की उपेक्षा करते हैं, पत्नी को 'शानयल बुढ़िया' जैसे व्यंग्य से उखाड़ते हैं, और किशनदा की विरासत को आँख मूँदकर अपनाते हैं।

विकल्प (ख) के समर्थन में: यशोधर बाबू में नए और पुराने का वास्तविक द्वंद्व है — बेटे की कमाई से घर में आई नई चीजों पर वे ऊपर से आपत्ति करते हैं, पर भीतर से संतुष्ट होते हैं कि 'बड़े आदमी' माने जा रहे हैं। सिल्वर वैडिंग पर उनकी 'अनमनी किंतु संतुष्ट छवि' इसी द्वंद्व की अभिव्यक्ति है।

कहानी का अंत भी इसी द्वंद्व को उजागर करता है — बेटे का दिया ऊनी ड्रेसिंग गाउन पहनते हुए उनकी आँखों की कोर में नमी आ जाती है। वह नमी पुराने किशनदा की याद भी है और बच्चे के स्नेह की स्वीकृति भी।

इसलिए ये एक ऐसे पात्र हैं जो परिवर्तन की पीड़ा और परंपरा के मोह के बीच फँसे हैं — वे सहानुभूति के पात्र हैं, आलोचना के भी।

उत्तर: पाठ के प्रमाणों के आधार पर (ख) कथन उचित है। यशोधर बाबू में नए और पुराने का वास्तविक द्वंद्व है — वे बाहर से नया नकारते हैं, पर भीतर से उसे महसूस करते हैं। अंत में ड्रेसिंग गाउन पहनते हुए आँखों में आई नमी इसी द्वंद्व की परिणति है। वे सहानुभूति के पात्र हैं।